विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग- दशम्

विषय -हिंदी

।।अध्ययन -सामग्री ।।

निर्देश -दी गई अध्ययन-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें, समझें व लिखें ।

जिज्ञासा या समस्या संबंधी प्रश्न संबंधित वर्ग- समूह कर सकते हैं ।

08.42 LTE1

सूरदास क द्धताय पद

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

सूरदास के पद की व्याख्या- हे उधव कृष्ण से मिलन की अभिलाषा हमारे मन में ही रह गई। हमें यह आशा थी कि शीघ्र ही कृष्ण के दर्शन हो जाएंगे हम चाहती थी कि जिन बातों को न कहना पड़े, उन बातों को अब हम किससे कहें हम अपने मन की बातें केवल कृष्ण को बताना चाहती थी लेकिन उनके न आने पर अब हम किसके सामने अपनी इच्छाएं व्यक्त करें। हर पल कृष्ण के आने की उम्मीद बनी हुई थी इसलिए शरीर और मन हर प्रकार की व्यथा को सहन कर रही थी। हमारा समय इसी आशा के सहारे व्यतीत हो रहा था कि कृष्ण से भेंट होगी, अब तुम्हारे द्वारा योग ज्ञान के इस संदेश को सुनकर हम कृष्ण के वियोग की आग में जलने लगी है। जिधर से हम विरह की आग से रक्षा करने के लिए पुकार लगाना चाहती थी उधर से ही यह प्रचंड अग्नि की धारा प्रवाहित हो रही है। हम कृष्ण के विरह में व्याकुल होकर उनसे मिलने को व्याकुल है और वह है कि ज्ञान योग का संदेश भेज कर हमें विरह की अग्नि में जला रहे हैं|

सूरदास जी बताते हैं कि गोपियां कहती हैं कि अब हम धैर्य क्यों धारण करें, जब कृष्ण ने ही अपनी मर्यादा नहीं रखी, अब हमारे धैर्य का बांध टूटने के कगार पर है।